

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 9: भगीरथ

21 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



तीन पीढ़ियों के राजाओं की युगों-लंबी तपस्या के पश्चात्, पवित्र गंगा अन्ततः स्वर्ग से उतरती हैं — और भगवान् शिव उनके प्रचण्ड वेग को शान्तभाव से अपनी जटाओं पर धारण कर लेते हैं, ताकि पृथ्वी बिना विदीर्ण हुए उन्हें धारण कर सके।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञप्ति में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह नवाँ अध्याय शुकदेव के वर्णन को पवित्र गंगा के अवतरण से लेकर सूर्यवंश होते हुए राजा खट्वाङ्ग की अन्तिम घड़ी तक ले जाता है, और सर्वत्र यह दर्शाता है कि जल, शक्ति अथवा वैभव नहीं, अपितु स्वयं भगवान् की उपस्थिति ही सच्चे अर्थों में पवित्र करती और उद्धार करती है।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 9 (नवम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: राजा भगीरथ और पवित्र गंगा का अवतरण
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: सूर्यवंश का राज्य; भगीरथ की तपस्या का स्थल; गंगा के मार्ग में स्वर्ग एवं पृथ्वी; इक्ष्वाकु-वंश के आश्रम
- केन्द्रीय विषय: भगीरथ की तपस्या से पवित्र गंगा का अवतरण, सगर के पुत्रों का उद्धार, शापग्रस्त राजा सौदास की कथा, और राजा खट्वाङ्ग का मोक्ष
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 1–49
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

गंगा हेतु दीर्घ तपस्या

शुकदेव ने सूर्यवंश की कथा आगे बढ़ाई। अंशुमान, जिन्होंने यज्ञीय अश्व को पुनः प्राप्त किया था, अपने पूर्वजों के उद्धार हेतु पवित्र गंगा को पृथ्वी पर लाना चाहते थे; उन्होंने दीर्घकाल तक तपस्या की किन्तु सफल न हुए, और समय पाकर देहत्याग कर गए। उनके पुत्र दिलीप ने भी उसी प्रकार प्रयत्न किया और असफल रहे, प्रयास में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। यह दिलीप के पुत्र भगीरथ थे जिन्होंने इतनी महान् तपस्या की कि अन्ततः पवित्र नदी की देवी प्रसन्न हो गई। उन्होंने प्रत्यक्ष प्रकट होकर राजा को वर देने का प्रस्ताव किया। विनम्रता से झुककर राजा ने अपने हृदय की अभिलाषा निवेदित की।

दर्शयामास तं देवी प्रसन्ना वरदास्मि ते ।

इत्युक्तः स्वमभिप्रायं शशंसावनतो नृपः ॥ ३ ॥

darśayām āsa taṁ devī prasannā varadāsmi te ity uktaḥ svam abhiprāyaṁ śaśaṁsāvanato nṛpaḥ

अर्थ: देवी ने प्रसन्न होकर उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया और कहा, “मैं तुम्हें वर देने को तैयार हूँ।” इस प्रकार कहे जाने पर राजा ने विनम्रतापूर्वक झुककर अपने हृदय की अभिलाषा उनके समक्ष रखी। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 3)



अपने पूर्वजों अंशुमान एवं दिलीप के असफल प्रयासों के पश्चात्, राजा भगीरथ की महान् तपस्या अन्ततः पवित्र नदी की देवी को प्रसन्न करती है, जो उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर प्रदान करने का प्रस्ताव करती हैं (श्लोक 1-3)।

किन्तु देवी ने दो गम्भीर शंकाएँ उठाई। उन्होंने कहा, पूर्ण वेग से उतरते समय किसी को उन्हें धारण करना होगा — अन्यथा वे पृथ्वी की कठोर सतह को भेदकर पाताल लोक में चली जाएँगी। और इससे भी अधिक: जब संसार के लोग उनमें स्नान करेंगे और अपने पाप उनके जल में धो डालेंगे, तब वे स्वयं वह संचित पाप कहाँ धोएँगी? राजा इस पर भली-भाँति विचार करें।

भगीरथ का उत्तर और भगवान् शिव

भगीरथ ने एक भक्त के विवेक से दोनों शंकाओं का उत्तर दिया। उनके पापों के विषय में उन्होंने कहा कि साधुजन — जिन्होंने संसार त्याग दिया है, जो शान्त हैं, ब्रह्म में स्थित हैं और समस्त संसार को पवित्र करने में समर्थ हैं — उनके जल में स्नान करेंगे, और उनके शरीर के मात्र स्पर्श से वे उनके पाप हर लेंगे; क्योंकि समस्त पापों के नाशक भगवान् श्री हरि उनके हृदय में वास करते हैं।

श्रीभगीरथ उवाच

साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः ।

हरन्त्यघं तेऽङ्गसङ्गात् तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः ॥ ६ ॥

śrī-bhagīratha uvāca sādhave nyāsinaḥ śāntā brahmiṣṭhā loka-pāvanāḥ haranty agham te 'ṅga-saṅgāt teṣv āste hy agha-bhid dhariḥ

अर्थ: भगीरथ ने कहा: संसार-त्यागी, शान्त, ब्रह्म में स्थित एवं समस्त लोकों को पवित्र करने वाले साधुजन अपने शरीर के स्पर्श से आपका पाप हर लेंगे; क्योंकि पापनाशक भगवान् हरि उनके भीतर वास करते हैं। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 6)

और उन्हें धारण करने के विषय में उन्होंने कहा कि भगवान् रुद्र, समस्त देहधारियों के आत्मस्वरूप — जिनमें यह सम्पूर्ण विश्व ताने-बाने के समान वस्त्र के धागों में बुना हुआ है — उनके अवतरण को धारण करेंगे।

धारयिष्यति ते वेगं रुद्रस्त्वात्मा शरीरिणाम् ।
यस्मिन्नोतमिदं प्रोतं विश्वं शाटीव तन्तुषु ॥ ७ ॥

dhārayiṣyati te vegam rudras tv ātmā śarīriṇām yasminn otam idaṁ protaṁ viśvaṁ śāṭīva tantuṣu

अर्थ: भगवान् रुद्र, समस्त देहधारियों के आत्मा — जिनमें यह विश्व वस्त्र के धागों में ताने-बाने के समान बुना हुआ है — आपके वेग को धारण करेंगे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 7)

ऐसा कहकर भगीरथ ने अपनी तपस्या से भगवान् शिव को प्रसन्न किया, और थोड़े ही समय में समस्त लोकों के हितैषी भगवान् प्रसन्न हो गए। “तथास्तु” कहकर राजा की प्रार्थना स्वीकार करते हुए, शिव ने श्री हरि के चरणों के स्पर्श से पवित्र हुई गंगा को सावधानी से अपने मस्तक पर धारण किया।

तथेति राज्ञाभिहितं सर्वलोकहितः शिवः ।
दधारावहितो गङ्गां पादपूतजलां हरेः ॥ ९ ॥

tatheti rājñābhihitaṁ sarva-loka-hitaḥ śivaḥ dadhārāvahito gaṅgāṁ pāda-pūta-jalāṁ hareḥ

अर्थ: राजा की प्रार्थना पर “तथास्तु” कहकर, समस्त लोकों के हितैषी भगवान् शिव ने भगवान् हरि के चरणों से पवित्र हुई गंगा को सावधानीपूर्वक अपने मस्तक पर धारण किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 9)

अवतरण और सगर के पुत्रों का उद्धार

तत्पश्चात् राजर्षि भगीरथ समस्त विश्व को पवित्र करने में समर्थ गंगा को उसी स्थान पर ले गए जहाँ उनके प्रपितामह के भ्राता, सगर के पुत्र, भस्म होकर पड़े थे। वायु के समान वेगवान् रथ में आगे-आगे चलते हुए उन्होंने नदी को आकर्षित किया, और गंगा उनके पीछे-पीछे चलीं, अपने मार्ग की प्रत्येक भूमि को पवित्र करती हुई, जब तक कि अन्ततः उन्होंने सगर के जले हुए पुत्रों की भस्म को स्नान न करा दिया। यद्यपि वे राजकुमार एक पवित्र ऋषि के विरुद्ध अपने घोर अपराध से नष्ट हुए थे, गंगा के जल के मात्र स्पर्श ने उनकी भस्म को स्वर्ग तक उठा दिया।

यज्जलस्पर्शमात्रेण ब्रह्मदण्डहता अपि ।
सगरात्मजा दिवं जग्मुः केवलं देहभस्मभिः ॥ १२ ॥

yaj-jala-sparśa-mātreṇa brahma-danḍa-hatā api sagarātmajā divaṁ jagmuḥ kevalaṁ deha-bhasmabhiḥ

अर्थ: उसके जल के मात्र स्पर्श से सगर के पुत्र — यद्यपि ब्राह्मण के विरुद्ध अपराध से मारे गए थे — केवल अपनी देह-भस्म के साथ ही स्वर्ग को चले गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 12)



भगीरथ के वेगवान् रथ के पीछे चलती पवित्र गंगा सगर के पुत्रों की भस्म को स्नान कराती है; यद्यपि वे अपने ही अपराध से नष्ट हुए थे, उसके पावन जल का मात्र स्पर्श उन्हें स्वर्ग तक उठा देता है (श्लोक 10-12)।

यदि अपराधियों की भस्म भी उसके जल के एक स्पर्श से स्वर्ग को उठा दी गई, तो शुकदेव ने विचार किया, फिर उनका क्या कहना जो प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक इस स्वर्गीय धारा का सेवन करते हैं, इसके लिए व्रत लेकर? यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, उन्होंने कहा, क्योंकि गंगा अनन्त भगवान् के चरणकमलों से निकलती हैं और जन्म-मरण के सम्पूर्ण चक्र को समाप्त करने में समर्थ हैं। और उन्हीं चरणों में श्रद्धापूर्वक मन को स्थिर करके, शुद्ध-हृदय मुनियों ने शीघ्र ही भगवान् के साथ एकत्व प्राप्त किया है, देह के साथ उस तादात्म्य को त्यागकर जिसे त्यागना अन्यथा इतना कठिन है।

भगीरथ का वंश सौदास तक

भगीरथ से श्रुत हुए, जिनके पुत्र नाभ थे; नाभ से सिन्धुद्वीप; उनसे अयुतायु; और अयुतायु से ऋतूपर्ण, नल के मित्र, जिन्होंने नल से अश्व-विद्या प्राप्त की और बदले में उन्हें द्यूत का रहस्य दिया। ऋतूपर्ण के पुत्र सर्वकाम थे।

श्रुतो भगीरथाज्जज्ञे तस्य नाभोऽपरोऽभवत् ।

सिन्धुद्वीपस्ततस्तस्मादयुतायुस्ततोऽभवत् ॥ १६ ॥

ऋतूपर्णो नलसखो योऽश्वविद्यामयान्नलात् ।

दत्त्वाक्षहृदयं चास्मै सर्वकामस्तु तत्सुतम् ॥ १७ ॥

śruto bhagīrathāj jajñe tasya nābho 'paro 'bhavat sindhudvīpas tatas tasmād ayutāyus tato 'bhavat ṛtūparṇo nala-sakho yo 'śva-vidyām ayān nalāt dattvākṣa-hṛdayaṁ cāsmāi sarvakāmas tu tat-sutam

अर्थ: भगीरथ से श्रुत उत्पन्न हुए, और उनसे नाभ; नाभ से सिन्धुद्वीप, और उनसे अयुतायु; उनसे ऋतूपर्ण हुए, नल के मित्र, जिन्होंने नल से अश्व-विद्या सीखी और बदले में उन्हें द्यूत का रहस्य दिया; और ऋतूपर्ण के पुत्र सर्वकाम थे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 16-17)

सर्वकाम से सुदास हुए, और उनके पुत्र सौदास थे, मदयन्ती के पति, जिन्हें मित्रसह और कहीं-कहीं कल्माषपाद भी कहा जाता था। अपने गुरु ऋषि वसिष्ठ के शाप से वे कुछ काल के लिए नरभक्षी राक्षस बन गए और अपने वंश से रहित रह गए। यह सुनकर राजा परीक्षित ने शुकदेव से पूछा कि किस कारण ऋषि ने ऐसे महान् राजा को शाप दिया।

राजा सौदास का शाप

शुकदेव ने बताया। आखेट के समय सौदास ने एक नरभक्षी राक्षस को मारा था किन्तु उसके भाई को छोड़ दिया था; और वह जीवित राक्षस, प्रतिशोध पर तुला हुआ, राजा के ही रसोइए का रूप धारण कर बैठा। जब ऋषि वसिष्ठ भोजन के लिए राजमहल में आए, तब उस छद्मवेषी राक्षस ने उन्हें मनुष्य का मांस परोसा। तुरन्त उस निषिद्ध भोजन को पहचानकर क्रुद्ध ऋषि ने राजा को राक्षस हो जाने का शाप दे दिया। शीघ्र ही यह जानकर कि वह कर्म वास्तव में राक्षस का था, वसिष्ठ ने शाप को बारह वर्ष तक सीमित कर दिया। सौदास ने भी बदले में अपने अंजुली में जल लेकर अपने गुरु को शाप देना चाहा; किन्तु उनकी पत्नी मदयन्ती ने उन्हें रोक दिया। यह देखकर कि समस्त संसार — दिशाएँ, आकाश और पृथ्वी — जीवों से भरा है, राजा ने वह क्रोध-भरा जल किसी पर नहीं फेंका, और उसे अपने ही चरणों पर डाल दिया। इस कृपा के कारण वे मित्रसह, “सबके प्रति दयालु,” कहलाए, और, चूँकि जल ने उनके चरणों को काला कर दिया, कल्माषपाद।

रक्षःकृतं तद् विदित्वा चक्रे द्वादशवार्षिकम् ।

सोऽप्यपोऽञ्जलिमादाय गुरुं शप्तुं समुद्यतः ॥ २३ ॥

वारितो मदयन्त्यापो रुशतीः पादयोर्जहौ ।

दिशः खमवनीं सर्वं पश्यञ्जीवमयं नृपः ॥ २४ ॥

rakṣaḥ-kṛtaṁ tad viditvā cakre dvādaśa-vārṣikam so 'py apo-'ñjalim ādāya guruṁ śaptuṁ samudyataḥ vārīto madayantyāpo ruśatīḥ pādayor jahau diśaḥ kham avanīm sarvaṁ paśyañ jīvamayaṁ nṛpaḥ

अर्थ: राक्षस के इस कुकृत्य को पहचानकर वसिष्ठ ने अपने शाप की अवधि बारह वर्षों तक सीमित कर दी; और सौदास अपनी अंजुली में जल लेकर प्रत्युत्तर में गुरु को शाप देने को उद्यत हुए। किन्तु रानी मदयन्ती द्वारा रोके जाने पर, तथा यह देखकर कि दिशाएँ, आकाश और पृथ्वी सर्वत्र जीवों से भरे हैं, उन्होंने वह क्रोध-भरा जल अपने ही चरणों पर उड़ेल दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 23-24)



अपने गुरु द्वारा शापित और बदले में शाप देने को उद्यत, राजा सौदास को उनकी रानी मदन्यन्ती रोक देती हैं; किसी जीव को हानि पहुँचाने को तैयार न होकर, वे वह क्रोध-भरा जल अपने ही चरणों पर डाल देते हैं — एक ऐसा दया-कर्म जो उन्हें मित्रसह नाम दिलाता है (श्लोक 23-24)।

राक्षसी स्वभाव में गिरे हुए, सौदास एक दिन वन में एक ब्राह्मण-दम्पती के पास आए और, क्रूर भूख से प्रेरित होकर, पति को पकड़ लिया। पत्नी ने करुण विनती की, उन्हें स्मरण कराते हुए कि वे कोई सच्चे राक्षस नहीं बल्कि इक्ष्वाकु के महान् वंशज हैं, और एक विद्वान् एवं सद्गुणी ब्राह्मण को छोड़ देने की प्रार्थना की जिसने अभी तक पुत्र नहीं पाया था। किन्तु शाप से मोहित राजा ने उसे खा लिया। अपने शोक और क्रोध में उस पतिव्रता ब्राह्मणी ने राजा को शाप दिया कि यदि वह कभी अपनी पत्नी के पास जाएगा तो मर जाएगा, और फिर वह अपने पति के साथ अग्नि में प्रवेश कर गई। जब उनके बारह वर्ष समाप्त हुए और शाप हटा, तब सौदास को पुनः मदन्यन्ती ने रोक दिया, जो उस ब्राह्मणी के शाप को जानती थीं; तत्पश्चात् वे अपनी सन्तान से रहित रहे। राजा की प्रार्थना पर ऋषि वसिष्ठ ने मदन्यन्ती के द्वारा एक सन्तान उत्पन्न की। उन्होंने बालक को सात वर्ष तक गर्भ में धारण किया बिना जन्म दिए, जब तक कि वसिष्ठ ने पत्थर से उनके गर्भ पर आघात न किया, और जो बालक निकला उसका नाम इसी कारण अश्मक, “पत्थर से उत्पन्न,” रखा गया।

अश्मक से राजा खट्वाङ्ग तक

अश्मक से मूलक हुए। जब परशुराम क्षत्रिय-वंश का संहार कर रहे थे, तब मूलक को स्त्रियों ने कवच के समान घेरकर रक्षा की, और इसलिए वे नारीकवच, “स्त्रियों द्वारा रक्षित,” कहलाए; और चूँकि वे पुनरुज्जीवित क्षत्रिय-वंश के बीज बने, वे मूलक, “जड़,” कहलाए। मूलक से दशरथ हुए, फिर ऐडविड, फिर विश्वसह, और फिर खट्वाङ्ग, जो चक्रवर्ती सम्राट् बने। स्वयं अजेय खट्वाङ्ग ने देवताओं की प्रार्थना पर युद्ध में उनके शत्रुओं का वध किया। जब देवताओं ने उन्हें वर देना चाहा, तब उन्होंने केवल यह पूछा कि उनका कितना जीवन शेष है — और यह जानकर कि केवल एक घड़ी शेष है, वे तुरन्त अपनी नगरी लौट आए और अपना समस्त मन भगवान् पर लगा दिया।



देवताओं द्वारा यह बताए जाने पर कि केवल एक घड़ी का जीवन शेष है, चक्रवर्ती सम्राट् खट्वाङ्ग तुरन्त घर लौटते हैं और अपना सम्पूर्ण मन भगवान् विष्णु पर स्थिर करते हैं, यह घोषित करते हुए कि भगवान् एवं उनके भक्तों से बढ़कर उन्हें कुछ भी प्रिय नहीं (श्लोक 42-47)।

उस अन्तिम घड़ी में खट्वाङ्ग ने विचार किया कि कुछ भी — न जीवन, न पुत्र, न धन, न पृथ्वी, न राज्य, न स्वयं उनकी रानी — उन्हें ब्राह्मणों से, अपने कुल के पूज्यों से, बढ़कर प्रिय नहीं था; कि कभी, बाल्यकाल में भी, उनके मन ने अधर्म में आनन्द नहीं लिया; और कि उन्होंने यशस्वी भगवान् के अतिरिक्त किसी अन्य वास्तविकता को कभी नहीं पाया। यद्यपि तीनों लोकों के शासकों ने उन्हें कोई भी वांछित वर देना चाहा, उन्होंने किसी भोग की अभिलाषा नहीं की, भगवान् विष्णु के चिन्तन में लीन रहते हुए। विश्व के रचयिता के प्रति भक्ति के द्वारा, इन्द्रियों के क्षणभंगुर विषयों के प्रति समस्त आसक्ति को — जो भगवान् की माया के मात्र प्रक्षेप हैं — त्यागने का संकल्प करके, उन्होंने स्वयं को पूर्णतः उन्हीं को समर्पित कर दिया।

इति व्यवसितो बुद्ध्या नारायणगृहीतया ।

हित्वान्यभावमज्ञानं ततः स्वं भावमास्थितः ॥ ४८ ॥

iti vyavasito buddhyā nārāyaṇa-grhītayā hitvānya-bhāvam ajñānaṁ tataḥ svaṁ bhāvam āsthitaḥ

अर्थ: नारायण में पूर्णतः लगी बुद्धि से इस प्रकार संकल्पित होकर, और आत्मा से भिन्न वस्तुओं के साथ तादात्म्य के अज्ञान को त्यागकर, खट्वाङ्ग तत्काल अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 48)

यत् तद् ब्रह्म परं सूक्ष्मशून्यं शून्यकल्पितम् ।

भगवान् वासुदेवेति यं गृणन्ति हि सात्वताः ॥ ४९ ॥

yat tad brahma paraṁ sūkṣmam aśūnyaṁ śūnya-kalpitam bhagavān vāsudeveti yaṁ gṛṇanti hi sātvatāḥ

अर्थ: उन्होंने उस परम ब्रह्म को प्राप्त किया — सूक्ष्म, पूर्णतः सत् किन्तु अज्ञानियों को शून्य-सा प्रतीत होने वाला — जिसे भगवान् के भक्त परम पुरुष वासुदेव के रूप में गाते हैं। (नवम स्कन्ध, अध्याय 9, श्लोक 49)



अपना मन नारायण पर स्थिर करके, राजा खट्वाङ्ग समस्त मिथ्या तादात्म्य को त्याग देते हैं और, अपनी अन्तिम घड़ी में, अपने शाश्वत स्वरूप में स्थित हो जाते हैं — उस परम पुरुष के साथ एक जिसे भक्त वासुदेव के रूप में गाते हैं (श्लोक 48-49)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. पवित्र प्रयास विरले ही व्यर्थ जाता है। तीन पीढ़ियों — अंशुमान, दिलीप, और भगीरथ — ने गंगा के अवतरण हेतु परिश्रम किया। पहली दो इसे देखने के लिए जीवित न रहीं, फिर भी उनका प्रयत्न व्यर्थ नहीं गया; वह वही नींव था जिस पर भगीरथ की सफलता खड़ी हुई (श्लोक 1-3)।
2. शुद्ध जन संसार की अशुद्धि को हर लेते हैं। जब गंगा उनमें धोए गए पापों से भयभीत होती है, तब उत्तर यह है कि साधुजन, जिनके हृदय में भगवान् हरि वास करते हैं, अपने स्पर्श से उन्हें शुद्ध कर देंगे। पवित्रता संक्रामक है; शुद्ध जनों की संगति पवित्र करती है (श्लोक 6-7)।
3. कृपा पतितों का भी उद्धार कर सकती है। सगर के पुत्र, अपने ही अपराध से नष्ट, गंगा के जल के एक स्पर्श से अपनी भस्म-सहित स्वर्ग को उठा दिए जाते हैं — इस बात का चिह्न कि भगवान् की कृपा उन तक भी पहुँचती है जो निराश्रय प्रतीत होते हैं (श्लोक 12-13)।
4. सच्ची श्रेष्ठता अपनी ही शक्ति को संयमित करती है। अन्यायपूर्वक शापित सौदास बदले में अपने गुरु को शाप दे सकते थे, किन्तु किसी जीव को हानि पहुँचाने के जोखिम के बजाय उन्होंने वह क्रोध-भरा जल अपने चरणों पर डाल दिया। अपनी कीमत पर भी बख्श देने वाली दया महान् आत्मा का चिह्न है (श्लोक 23-24)।
5. अन्तिम समय में भगवान् पर स्थिर मन परम गति प्राप्त करता है। शुकदेव यहाँ एक और गहन सत्य जोड़ते हैं: शक्ति एवं दीर्घायु के समस्त वैभव से युक्त देवता भी अपने मन को भगवान् पर स्थिर नहीं रख पाते, क्योंकि उनका मन भी भौतिक अवस्थाओं से विचलित रहता है — वैभव भक्ति का स्थानापन्न नहीं हो सकता। केवल एक घड़ी का जीवन पाकर राजा खट्वाङ्ग उसका एक भी क्षण उस पर शोक करने में व्यर्थ नहीं करते

जो उन्हें पीछे छोड़ना होगा; वे प्रत्येक आसक्ति को आकाश में दिखने वाले किसी नगर के समान क्षणभंगुर मानकर त्याग देते हैं, और अपना सम्पूर्ण अस्तित्व भगवान् की ओर मोड़ देते हैं। हमारी अवधि चाहे जो हो, अन्तिम लेख में हृदय जिस दिशा में मुड़ता है — न कि उसके चतुर्दिक् की शक्ति या सम्पत्ति — वही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है (श्लोक 45-49)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस घटनाओं-भरे अध्याय में एक शान्त सूत्र बहता है, और वह है एक स्पर्श और एक घड़ी की शक्ति। भगीरथ की सम्पूर्ण तपस्यामय जीवनयात्रा उस एक क्षण में फलित होती है जब गंगा अन्ततः शिव के मस्तक पर उतरती हैं; सगर के नष्ट हुए पुत्र उसके जल के मात्र स्पर्श से उद्धार पाते हैं; और खट्वाङ्ग, समस्त पृथ्वी के स्वामी, को भगवान् तक पहुँचने के लिए केवल एक अविचलित घड़ी चाहिए। भागवत मानो यह फुसफुसाता है कि कृपा हमारी योग्यता को वर्षों से नहीं मापती, बल्कि हमसे वहीं मिलती है जहाँ हृदय सच्चे भाव से भगवान् की ओर मुड़ता है। भगीरथ हमें दृढ़ रहना सिखाते हैं तब भी जब हमारे पूर्वजों का परिश्रम असफल-सा प्रतीत हो; सौदास, एक भयानक नियति के बीच अपने एक दया-कर्म में, हमें सिखाते हैं कि एक शापित और पतित मनुष्य भी दया चुन सकता है; और खट्वाङ्ग हमें सिखाते हैं कि कभी बहुत देर नहीं होती, कि पूर्णतः भगवान् को दी गई एक घड़ी सम्पूर्ण जीवन को समेट सकती है। गंगा आज भी बहती हैं, आज भी भगवान् के चरणों से उत्पन्न, आज भी उसे हर ले जाने को तत्पर जिसे हम स्वयं शुद्ध नहीं कर सकते। हमें केवल झुके हुए मस्तक से उनके स्रोत की ओर मुड़ना है, जैसे भगीरथ ने किया, और जैसे खट्वाङ्ग ने अपनी अन्तिम घड़ी में किया।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, राजा खट्वाङ्ग की एक घड़ी की भावना में, केवल भगवान् के लिए कुछ अविचलित क्षण अलग रखें। शान्त बैठें, दिन की चिन्ताओं को “किसी काल्पनिक योजना से अधिक वास्तविक नहीं” मानकर छोड़ दें, और मृदुता से दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” यदि आप किसी नदी, सरोवर या बहते जल के निकट रहते हैं, या घर में स्वच्छ जल के एक साधारण पात्र के पास भी, तो भगवान् के चरणों से उत्पन्न पवित्र गंगा का स्मरण करें, और उस कृपा के लिए मौन प्रार्थना अर्पित करें जो उसे शुद्ध करती है जिसे हम स्वयं शुद्ध नहीं कर सकते। इस छोटे, पूर्ण-हृदय भगवान्-अभिमुखी भाव को अपना अभ्यास बनने दें — यह विश्वास करते हुए, जैसे खट्वाङ्ग ने किया, कि पूर्णतः भगवान् को दी गई कोई घड़ी कभी बहुत देर या बहुत छोटी नहीं होती।

उपसंहार

इस अध्याय में गंगा का अवतरण और राजा खट्वाङ्ग की अन्तिम घड़ी दोनों एक ही केन्द्रीय सत्य की ओर संकेत करते हैं: किसी आत्मा को पवित्र करने और उद्धार करने वाला न तो जल है, न शक्ति, न वैभव, अपितु स्वयं भगवान् की उपस्थिति है — चाहे वह उनके शुद्ध भक्तों में निवास करे, उनके ही चरणों से प्रवाहित हो, अथवा एक ही अविचलित घड़ी के अखण्ड स्मरण में समाई हो। भगीरथ की दृढ़ता, एक भयानक नियति के बीच सौदास का एक दया-कर्म, और खट्वाङ्ग का अविचलित समर्पण — ये सभी हमें इस सत्य का स्मरण कराएँ: हमारी आयु चाहे जितनी हो, वासुदेव की ओर पूर्णतः मुड़ा हुआ हृदय कभी लौटाया नहीं जाता।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, नवम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञम · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-9-bhagiratha-descent-of-the-ganga-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट